7 हरिशंकर परसाई

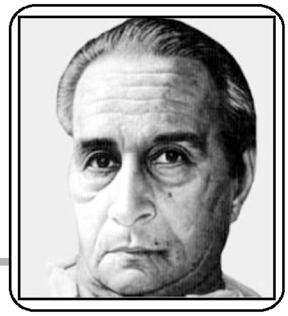

लेखक : एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**—22 अगस्त, सन् 1924 ई0।
- **जन्म-स्थान**—जमानी (होशंगाबाद), म0 प्र0।
- **सम्पादन**—'वसुधा' मासिक पत्रिका।
- **लेखन विधा :** व्यंग्य।
- **भाषा :** सरल, प्रवाहमयी, खड़ी बोली।
- **शैली :** व्यंग्यात्मक, आत्मपरक।
- **प्रमुख रचनाएँ**—सदाचार का तावीज, रानी नागफनी की कहानी, जैसे उनके दिन फिरे।
- **मृत्यु**—10 अगस्त, सन् 1995 ई0।

हरिशंकर परसाई का जन्म मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिला के अन्तर्गत जमानी नामक स्थान में 22, अगस्त सन् 1924 ई0 को हुआ था। प्रारम्भ से लेकर स्नातक स्तर तक की शिक्षा मध्य प्रदेश में ही हुई और नागपुर विश्वविद्यालय से इन्होंने हिन्दी में एम0 ए0 किया। 18 वर्ष की उम्र में इन्होंने जंगल विभाग में नौकरी की। खण्डवा में 6 माह तक अध्यापन कार्य किया तथा सन् 1941 से 1943 ई0 तक 2 वर्ष जबलपुर में स्पेंस ट्रेनिंग कालेज में शिक्षण कार्य किया। 1943 में वहीं मॉडल हाईस्कूल में अध्यापक हो गये। 1952 ई0 में इन्होंने सरकारी नौकरी छोड़ दी। 1953 से 1957 ई0 तक प्राइवेट स्कूलों में नौकरी की। 1957 ई0 में नौकरी छोड़कर स्वतन्त्र लेखन की शुरुआत की। कलकत्ता के ललित कला महाविद्यालय से सन् 1960 में डिप्लोमा किया। अध्यापन-कार्य में ये कुशल थे, किन्तु आस्था के विपरीत अनेक बातों का अध्यापन इनको यदा-कदा खटक जाता था। 10 अगस्त, 1995 ई0 को इनका निधन हो गया।

साहित्य में इनकी रुचि प्रारम्भ से ही थी। अध्यापन कार्य के साथ-साथ ये साहित्य सृजन की ओर मुड़े और जब यह देखा कि इनकी नौकरी इनके साहित्यिक कार्य में बाधा पहुँचा रही है तो इन्होंने नौकरी को तिलांजलि दे दी और स्वतंत्र लेखन को ही अपने जीवन का उद्देश्य निश्चित करके साहित्य-साधना में जुट गये। इन्होंने जबलपुर से 'वसुधा' नामक एक साहित्यिक मासिक पत्रिका भी निकाली जिसके प्रकाशक व संपादक ये स्वयं थे। वर्षों तक विषम आर्थिक परिस्थिति में भी पत्रिका का प्रकाशन होता रहा और बाद में बहुत घाटा हो जाने पर इसे बन्द कर देना पड़ा। सामयिक साहित्य के पाठक इनके लेखों को वर्तमान समय की प्रमुख हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में पढ़ते हैं। परसाई जी नियमित रूप से 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान', 'धर्मयुग' तथा अन्य पत्रिकाओं के लिए अपनी रचनाएँ लिखते रहे।

परसाई जी हिन्दी व्यंग्य के आधार-स्तम्भ थे। इन्होंने हिन्दी व्यंग्य को नयी दिशा प्रदान की। 'विकलांग श्रद्धा का दौर' के लिए इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। फ्रांसीसी सरकार की छात्रवृत्ति पर इन्होंने पेरिस-प्रवास किया। ये उपन्यास एवं निबन्ध लेखन के बाद भी मुख्यतया व्यंग्यकार के रूप में विख्यात रहे।

परसाई जी की प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं—

कहानी संग्रह–1. हँसते हैं, रोते हैं, 2. जैसे उनके दिन फिरे।

उपन्यास– 1. रानी नागफनी की कहानी,
2. तट की खोज।

निबंध संग्रह– 1. तब की बात और थी,
2. भूत के पाँव पीछे,
3. बेईमान की परत,
4. पगडंडियों का जमाना,
5. सदाचार की तावीज,
6. शिकायत मुझे भी है,
7. और अन्त में।

परसाई जी द्वारा रचित कहानी, उपन्यास तथा निबंध व्यक्ति और समाज की कमजोरियों पर चोट करते हैं। समाज और व्यक्ति में कुछ ऐसी विसंगतियाँ होती हैं जो जीवन को आडम्बरपूर्ण और दूभर बना देती हैं। इन्हीं विसंगतियों का पर्दाफाश परसाई जी ने किया है। कभी-कभी छोटी-छोटी बातें भी हमारे व्यक्तित्त्व को विघटित कर देती हैं। परसाई जी के लेख पढ़ने के बाद हमारा ध्यान इन विसंगतियों और कमजोरियों की ओर बरबस चला जाता है।

परसाई जी की शैली व्यंग्य-प्रधान है। एक प्रकार से परसाई जी व्यंग्य-लेखक ही हैं। आजकल व्यंग्य का नाम आते ही परसाई जी का नाम अपने-आप सफल व्यंग्य-लेखकों में आ जाता है। इनके व्यंग्य के विषय सामाजिक एवं राजनीतिक हैं। समय की कमजोरियों एवं राजनीति के फरेबों पर करारे व्यंग्य लिखने में ये सिद्धहस्त हैं। बोलचाल के शब्दों, तत्सम और विदेशी शब्दों का चुनाव उत्तम है। कहाँ कौन-सा शब्द अधिक चोट करेगा, कौन-सा शब्द बात को अधिक अर्थवत्ता प्रदान करेगा, इसका ध्यान परसाई जी को सदा रहता है। भाषा में व्यावहारिकता लाने के लिए इन्होंने उर्दू एवं अंग्रेजी के शब्दों का भी प्रयोग किया।

प्रस्तुत संकलन में **'निन्दा रस'** निबंध व्यंग्य की दृष्टि से एक सुन्दर कलाकृति है। अनेक व्यक्ति एक-दूसरे के प्रति ईर्ष्या-भाव से निन्दा करते रहते हैं, कुछ व्यक्ति अपने स्वभाववश अकारण ही निन्दा में रस लेते रहते हैं, कुछ व्यक्ति अपने को बड़ा सिद्ध करने के लिए बड़ों की निन्दा में निर्लिप्त-भाव से मग्न रहते हैं, कुछ मिशनरी निन्दक होते हैं और कुछ अन्य भावों से प्रेरित होकर निन्दा-कार्य में रत रहते हैं। इस निबंध में परसाई जी ने निन्दकों की अच्छी खबर ली है और उन पर करारी चोट की है। प्रहार तीव्र होते हुए भी पढ़ने में रुचि बनी रहती है।

निन्दा रस

'क' कई महीने बाद आये थे। सुबह चाय पीकर अखबार देख रहा था कि वे तूफान की तरह कमरे में घुसे, 'साइक्लोन' की तरह मुझे अपनी भुजाओं में जकड़ा तो मुझे धृतराष्ट्र की भुजाओं में जकड़े भीम के पुतले की याद आ गयी। यह धृतराष्ट्र की ही जकड़ थी। अंधे धृतराष्ट्र ने टटोलते हुए पूछा, 'कहाँ है भीम? आ बेटा, तुझे कलेजे से लगा लूँ।'' और जब भीम का पुतला उनकी पकड़ में आ गया तो उन्होंने प्राणघाती स्नेह से उसे जकड़कर चूर कर डाला।

ऐसे मौके पर हम अक्सर अपने पुतले को अंकवार में दे देते हैं, हम अलग खड़े देखते रहते हैं। 'क' से क्या मैं गले मिला? क्या मुझे उसने समेटकर कलेजे से लगा लिया? हरगिज नहीं। मैंने अपना पुतला ही उसे दिया। पुतला इसलिए उसकी भुजाओं में सौंप दिया कि मुझे मालूम था कि मैं धृतराष्ट्र से मिल रहा हूँ। पिछली रात को एक मित्र ने बताया कि 'क' अपनी ससुराल आया है और 'ग' के साथ बैठकर शाम को दो-तीन घंटे तुम्हारी निन्दा करता रहा। इस सूचना के बाद जब आज सबेरे वह मेरे गले लगा तो मैंने शरीर से अपने मन को चुपचाप खिसका दिया और निःस्नेह, कँटीली देह उसकी बाँहों में छोड़ दी। भावना के अगर काँटे होते तो उसे मालूम होता कि वह नागफनी को कलेजे से चिपटाये है। छल का धृतराष्ट्र जब आलिंगन करे, तो पुतला ही आगे बढ़ाना चाहिए।

पर वह मेरा दोस्त अभिनय में पूरा है। उसके आँसू भर नहीं आये, बाकी मिलन के हर्षोल्लास के सब चिह्न प्रकट हो गये—वह गहरी आत्मीयता की जकड़, नयनों से छलकता वह असीम स्नेह और वह स्नेहसिक्त वाणी।

बोला, 'अभी सुबह की गाड़ी से उतरा और एकदम तुमसे मिलने चला आया, जैसे आत्मा का एक खण्ड दूसरे खण्ड से मिलने को आतुर रहता है।'' आते ही झूठ बोला कम्बख्त। कल का आया है, यह मुझे मेरा मित्र बता गया था। इस झूठ में कोई प्रयोजन शायद उसका न रहा हो। कुछ लोग बड़े निर्दोष मिथ्यावादी होते हैं। वे आदतन, प्रकृति के वशीभूत झूठ बोलते हैं। उनके मुख से निष्प्रयास, निष्प्रयोजन झूठ ही निकलता है। मेरे एक रिश्तेदार ऐसे हैं। वे अगर बम्बई जा रहे हैं और उनसे पूछे, तो वे कहेंगे, 'कलकत्ता जा रहा हूँ।' ठीक बात उनके मुँह से निकल ही नहीं सकती। 'क' भी बड़ा निर्दोष, सहज-स्वाभाविक मिथ्यावादी है।

वह बैठा। कब आये? कैसे हो?—वगैरह के बाद उसने 'ग' की निन्दा आरम्भ कर दी। मनुष्य के लिए जो भी कर्म जघन्य हैं वे सब 'ग' पर आरोपित करके उसने ऐसे गाढ़े काले तारकोल से उसकी तस्वीर खींची कि मैं यह सोचकर काँप उठा कि ऐसी ही काली तस्वीर मेरी 'ग' के सामने इसने कल शाम को खींची होगी।

सुबह की बातचीत में 'ग' प्रमुख विषय था। फिर तो जिस परिचित की बात निकल आती, उसी को चार-छह वाक्यों में धराशायी करके वह बढ़ लेता।

अद्‌भुत है मेरा यह मित्र। उसके पास दोषों का 'केटलाग' है। मैंने सोचा कि जब वह हर परिचित की निन्दा कर रहा है तो क्यों न मैं लगे हाथों विरोधियों की गत, इसके हाथों करा लूँ। मैं अपने विरोधियों का नाम लेता गया और वह उन्हें निन्दा की तलवार से काटता चला। जैसे लकड़ी चीरने की आरा मशीन के नीचे मजदूर लकड़ी का लट्ठा खिसकाता जाता है और वह चीरता जाता है, वैसे ही मैंने विरोधियों के नाम एक-एक कर खिसकाये और वह उन्हें काटता गया। कैसा आनन्द था। दुश्मनों को रणक्षेत्र में एक के बाद एक कटकर गिरते हुए देखकर योद्धा को ऐसा ही सुख होता होगा।

मेरे मन में गत रात्रि के उस निन्दक मित्र के प्रति मैल नहीं रहा। दोनों एक हो गये। भेद तो रात्रि के अंधकार में ही मिटता है, दिन के उजाले में भेद स्पष्ट हो जाते हैं। निन्दा का ऐसा ही भेद-नाशक अँधेरा होता है। तीन-चार घंटे बाद, जब वह विदा हुआ तो हम लोगों के मन में बड़ी शांति और तुष्टि थी।

निन्दा की ऐसी ही महिमा है। दो-चार निन्दकों को एक जगह बैठकर निन्दा में निमग्न देखिए और तुलना कीजिए कि दो-चार ईश्वर-भक्तों से जो रामधुन लगा रहे हैं। निन्दकों की-सी एकाग्रता, परस्पर आत्मीयता, निमग्नता भक्तों में दुर्लभ है। इसलिए संतों ने निन्दकों को 'आँगन कुटी छवाय' पास रखने की सलाह दी है।

कुछ 'मिशनरी' निन्दक मैंने देखे हैं। उनका किसी से बैर नहीं, द्वेष नहीं। वे किसी का बुरा नहीं सोचते। पर चौबीसों घंटे वे निन्दा कर्म में बहुत पवित्र भाव में लगे रहते हैं। उनकी नितांत निर्लिप्तता, निष्पक्षता इसी से मालूम होती है कि वे प्रसंग आने पर अपने आप की पगड़ी भी उसी आनन्द से उछालते हैं, जिस आनन्द से अन्य लोग दुश्मन की। निन्दा इनके लिए 'टॉनिक' होती है।

ट्रेड यूनियन के इस जमाने में निन्दकों के संघ बन गये हैं। संघ के सदस्य जहाँ-तहाँ से खबरें लाते हैं और अपने संघ के प्रधान को सौंपते हैं। यह कच्चा माल हुआ। अब प्रधान उनका पक्का माल बनायेगा और सब सदस्यों को 'बहुजन हिताय' मुफ्त बाँटने के लिए दे देगा। यह फुरसत का काम है, इसलिए जिनके पास कुछ और करने को नहीं होता, वे इसे बड़ी खूबी से करते हैं। एक दिन हमसे एक ऐसे संघ के अध्यक्ष ने कहा, "यार आजकल लोग तुम्हारे बारे में बहुत बुरा-बुरा कहते हैं।" हमने कहा, "आपके बारे में मुझसे कोई भी बुरा नहीं कहता। लोग जानते हैं कि आपके कानों के घूरे में इस तरह का कचरा मजे में डाला जा सकता है।"

ईर्ष्या-द्वेष से प्रेरित निन्दा भी होती है। लेकिन इसमें वह मजा नहीं जो मिशनरी भाव से निन्दा करने में आता है। इस प्रकार का निन्दक बड़ा दुःखी होता है। ईर्ष्या-द्वेष से चौबीसों घंटे जलता है और निन्दा का जल छिड़ककर कुछ शांति अनुभव करता है। ऐसा निन्दक बड़ा दयनीय होता है। अपनी अक्षमता से पीड़ित वह बेचारा दूसरे की सक्षमता के चाँद को देखकर सारी रात श्वान जैसा भौंकता है। ईर्ष्या-द्वेष से प्रेरित निन्दा करनेवाले को कोई दंड देने की जरूरत नहीं है। वह निन्दक बेचारा स्वयं दण्डित होता है। आप चैन से सोइए और वह जलन के कारण सो नहीं पाता। उसे और क्या दंड चाहिए? निरन्तर अच्छे काम करते जाने से उसका दंड भी सख्त होता जाता है। जैसे एक कवि ने एक अच्छी कविता लिखी, ईर्ष्याग्रस्त निन्दक को कष्ट होगा। अब अगर एक और अच्छी लिख दी तो उसका कष्ट दुगना हो जायेगा।

निन्दा का उद्‌गम ही हीनता और कमजोरी से होता है। मनुष्य अपनी हीनता से दबता है। वह दूसरों की निन्दा करके ऐसा अनुभव करता है कि वे सब निकृष्ट हैं और वह उनसे अच्छा है। उसके अहं की इससे तुष्टि होती है। बड़ी लकीर को कुछ मिटाकर छोटी लकीर बड़ी बनती है। ज्यों-ज्यों कर्म क्षीण होता जाता है, त्यों-त्यों निन्दा की प्रवृत्ति बढ़ती जाती है। कठिन कर्म ही ईर्ष्या-द्वेष और उनसे उत्पन्न निन्दा को मारता है। इन्द्र बड़ा ईर्ष्यालु माना जाता है, क्योंकि वह निठल्ला है। स्वर्ग में देवताओं को बिना उगाया अन्न, बे बनाया महल और बिन बोये फल मिलते हैं। अकर्मण्यता में उन्हें अप्रतिष्ठित होने का भय बना रहता है, इसलिए कर्मी मनुष्यों से उन्हें ईर्ष्या होती है।

निन्दा कुछ लोगों की पूँजी होती है। बड़ा लंबा-चौड़ा व्यापार फैलाते हैं वे इस पूँजी से। कई लोगों की प्रतिष्ठा ही दूसरों की कलंक-कथाओं के पारायण पर आधारित होती है। बड़े रस-विभोर होकर वे जिस-तिस की सत्य कल्पित कलंक-कथा सुनाते हैं और स्वयं को पूर्ण संत समझने की तुष्टि का अनुभव करते हैं।

आप इनके पास बैठिए और सुन लीजिए, "बड़ा खराब जमाना आ गया। तुमने सुना? फलाँ और अमुक...।" अपने चरित्र पर आँख डालकर देखने की उन्हें फुरसत नहीं होती। एक कहानी याद आ रही है। एक स्त्री किसी सहेली के पति की निन्दा अपने पति से कर रही है। वह बड़ा उचक्का, दगाबाज आदमी है। बेईमानी से पैसा कमाता है। कहती है कि मैं उस सहेली की जगह होती तो ऐसे पति को त्याग देती। तब उसका पति उसके सामने यह रहस्य खोलता है कि वह स्वयं बेईमानी से इतना पैसा कमाता है। सुनकर स्त्री स्तब्ध रह जाती है। क्या उसने पति को त्याग दिया? जी हाँ, वह दूसरे कमरे में चली गयी।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि हममें जो करने की क्षमता नहीं है, वह यदि कोई करता है तो हमारे पिलपिले अहं को धक्का लगता है, हममें हीनता और ग्लानि आती है। तब हम उसकी निन्दा करके उससे अपने को अच्छा समझकर तुष्ट होते हैं।

उस मित्र की मुलाकात के करीब दस-बारह घंटे बाद यह सब मन में आ रहा है। अब कुछ तटस्थ हो गया हूँ। सुबह जब उसके साथ बैठा था तब मैं स्वयं निन्दा के 'काला सागर' में डूबता-उतराता था, कल्लोल कर रहा था। बड़ा रस है न निन्दा में। सूरदास ने इसलिए 'निन्दा सबद रसाल' कहा है।

—हरिशंकर परसाई

शब्दार्थ

निमग्न = लीन। **साइक्लोन** = चक्रवात, तेज और धूलभरी चक्कर काटती हुई आँधी। **महिमा** = महत्ता। **उद्‌गम** = प्रारम्भ। **निकृष्ट** = नीच। **मिशनरी** = लगन, तत्परता एवं कार्य के लिए कार्य की भावना की ओर संकेत। **बहुजन हिताय** = अधिकाधिक व्यक्तियों की भलाई के लिए। **धृतराष्ट्र की जकड़** = जन्मांध धृतराष्ट्र की भुजाओं में बड़ी शक्ति थी। महाभारत युद्ध के अन्त में दुर्योधन को भीम ने मार डाला। पुत्र की मृत्यु से दुःखी धृतराष्ट्र के मन में भी भीम से बदला लेने की इच्छा जागी और प्रकट रूप में भीम को गले लगाने की बात कही। श्रीकृष्ण धृतराष्ट्र के मन्तव्य को ताड़ गये और उन्होंने भीम के लोहे के पुतले को आगे करके कहा कि भीम खड़े हैं। धृतराष्ट्र ने आलिंगन में पुतले को इतने जोर से दबाया कि लोहे का पुतला चूर-चूर हो गया। **नागफनी** = कँटीला पौधा, एक विशेष प्रकार का कैक्टस। **धराशायी करना** = पराजित करना, जमीन पर लिटाना। **ट्रेड यूनियन** = श्रमिकों के हितों की रक्षा के लिए संघर्ष करनेवाला श्रमिक संगठन। **प्राणघाती** = जानलेवा। **स्नेह सिक्त** = प्रेममयी। **केटलॉग** = सूची। **भेदनाशक** = भेद समाप्त करने वाला। **मिशनरी** = अपने कार्य और लक्ष्य के प्रति लगनशील। **निमग्न** = डूबे हुए। **निर्लिप्तता** = माया-मोह से दूर। **बहुजन हिताय** = आम जनता के हित के लिए। **अक्षमता** = कमजोरी। **सक्षमता** = सामर्थ्य। **कल्लोल** = आनन्दित होना ।

अभ्यास प्रश्न

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

1. निम्नलिखित गद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) ऐसे मौके पर हम अक्सर अपने पुतले को अंकवार में दे देते हैं, हम अलग खड़े देखते रहते हैं। 'क' से क्या मैं गले मिला? क्या मुझे उसने समेटकर कलेजे से लगा लिया? हरगिज नहीं। मैंने अपना पुतला ही उसे दिया। पुतला इसलिए उसकी भुजाओं में सौंप दिया कि मुझे मालूम था कि मैं धृतराष्ट्र से मिल रहा हूँ। पिछली रात को एक मित्र ने बताया कि 'क' अपनी ससुराल आया है और 'ग' के साथ बैठकर शाम को दो-तीन घंटे तुम्हारी निन्दा करता रहा। इस सूचना के बाद जब आज सबेरे वह मेरे गले लगा तो मैंने शरीर से अपने मन को चुपचाप खिसका दिया और निःस्नेह, कँटीली देह उसकी बाँहों में छोड़ दी। भावना के अगर काँटे होते तो उसे मालूम होता कि वह नागफनी को कलेजे से चिपटाये है। <u>छल का धृतराष्ट्र जब आलिंगन करे, तो पुतला ही आगे बढ़ाना चाहिए।</u>

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश के लेखक एवं पाठ का नाम लिखिए।
(ii) ईर्ष्या-द्वेष की भावनाओं से युक्त मित्र से कैसे गले मिलने चाहिए?
(iii) प्रस्तुत गद्यांश में किस भाव को व्यक्त किया गया है?
(iv) लेखक ने किस पर व्यंग्य किया है?
(v) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ख) बोला, "अभी सुबह की गाड़ी से उतरा और एकदम तुमसे मिलने चला आया, जैसे आत्मा का एक खण्ड दूसरे खण्ड से मिलने को आतुर रहता है।" आते ही झूठ बोला कम्बख्त! कल का आया है, यह मुझे मेरा मित्र बता गया था। इस झूठ में कोई प्रयोजन शायद उसका न रहा हो। <u>कुछ लोग बड़े निर्दोष मिथ्यावादी होते हैं। वे आदतन, प्रकृति के वशीभूत झूठ बोलते हैं। उनके मुख से निष्प्रयास, निष्प्रयोजन झूठ ही निकलता है।</u> मेरे एक रिश्तेदार ऐसे हैं। वे अगर बम्बई जा रहे हैं और उनसे पूछें, तो वे कहेंगे, 'कलकत्ता जा रहा हूँ।' ठीक बात उनके मुँह से निकल ही नहीं सकती। 'क' भी बड़ा निर्दोष, सहज-स्वाभाविक मिथ्यावादी है।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) निर्दोष मिथ्यावादी लोग कौन होते हैं?

(iii) उपर्युक्त गद्यांश में लेखक ने किस प्रसंग का उल्लेख किया है?
(iv) उपर्युक्त गद्यांश किस शैली में है?
(v) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ग) अद्भुत है मेरा यह मित्र। उसके पास दोषों का 'केटलाग' है। मैंने सोचा कि जब वह हर परिचित की निन्दा कर रहा है तो क्यों न मैं लगे हाथों विरोधियों की गत, इसके हाथों करा लूँ। मैं अपने विरोधियों का नाम लेता गया और वह उन्हें निन्दा की तलवार से काटता चला। जैसे लकड़ी चीरने की आरा मशीन के नीचे मजदूर लकड़ी का लट्ठा खिसकाता जाता है और वह चीरता जाता है, वैसे ही मैंने विरोधियों के नाम एक-एक कर खिसकाये और वह उन्हें काटता गया। कैसा आनन्द था। दुश्मनों को रणक्षेत्र में एक के बाद एक कटकर गिरते हुए देखकर योद्धा को ऐसा ही सुख होता होगा। मेरे मन में गत रात्रि के उस निन्दक मित्र के प्रति मैल नहीं रहा। दोनों एक हो गये। भेद तो रात्रि के अंधकार में ही मिटता है, दिन के उजाले में भेद स्पष्ट हो जाते हैं। निन्दा का ऐसा ही भेद-नाशक अँधेरा होता है। तीन-चार घंटे बाद, जब वह विदा हुआ तो हम लोगों के मन में बड़ी शांति और तुष्टि थी।

निन्दा की ऐसी ही महिमा है। दो-चार निन्दकों को एक जगह बैठकर निन्दा में निमग्न देखिए और तुलना कीजिए कि दो-चार ईश्वर-भक्तों से जो रामधुन लगा रहे हैं। निन्दकों की-सी एकाग्रता, परस्पर आत्मीयता, निमग्नता भक्तों में दुर्लभ है। इसलिए संतों ने निन्दकों को 'आँगन कुटी छवाय' पास रखने की सलाह दी है।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश के लेखक एवं पाठ का नाम लिखिए।
(ii) लेखक ने किसका उदाहरण आरा मशीन से दिया है?
(iii) लेखक ने किसकी विशेषता का वर्णन किया है?
(iv) उपर्युक्त गद्यांश में किसका चित्रण किया गया है?
(v) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(घ) निन्दा का उद्गम ही हीनता और कमजोरी से होता है। मनुष्य अपनी हीनता से दबता है। वह दूसरों की निन्दा करके ऐसा अनुभव करता है कि वे सब निकृष्ट हैं और वह उनसे अच्छा है। उसके अहं की इससे तुष्टि होती है। बड़ी लकीर को कुछ मिटाकर छोटी लकीर बड़ी बनती है। ज्यों-ज्यों कर्म क्षीण होता जाता है त्यों-त्यों निन्दा की प्रवृत्ति बढ़ती जाती है। कठिन कर्म ही ईर्ष्या-द्वेष और उनसे उत्पन्न निन्दा को मारता है। इन्द्र बड़ा ईर्ष्यालु माना जाता है क्योंकि वह निठल्ला है। स्वर्ग में देवताओं को बिना उगाया अन्न, बे-बनाया महल और बिन बोये फल मिलते हैं। अकर्मण्यता में उन्हें अप्रतिष्ठित होने का भय बना रहता है, इसलिए कर्मी मनुष्यों से उन्हें ईर्ष्या होती है। **[2019 CL, CN, 20 ZK]**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पाठ का शीर्षक एवं लेखक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) निन्दा की प्रवृत्ति कब बढ़ती है?
(iv) देवताओं को भय क्यों बना रहता है?
(v) निन्दा रस का उद्गम कब होता है?
(vi) कर्मक्षीण होने पर किसकी प्रवृत्ति बढ़ जाती है?
(vii) निन्दा का उद्गम स्थल क्या है?
(viii) 'हीनता' और 'कर्मक्षीण' का शब्दार्थ क्या है?
(ix) निन्दा का उद्गम किससे होता है?
(x) देवताओं को कर्मी मनुष्यों से क्यों ईर्ष्या होती है?
(xi) ईर्ष्या-द्वेष और निन्दा को मारने के लिए क्या आवश्यक है?

(ङ) ईर्ष्या-द्वेष से प्रेरित निन्दा भी होती है, लेकिन इसमें वह मजा नहीं जो मिशनरी भाव से निन्दा करने में आता है। इस प्रकार का निन्दक बड़ा दुःखी होता है। ईर्ष्या-द्वेष से चौबीस घण्टे जलता है और निन्दा का जल छिड़ककर कुछ शान्ति अनुभव करता है। ऐसा निन्दक बड़ा दयनीय होता है। अपनी अक्षमता से पीड़ित वह बेचारा दूसरे की सक्षमता के चाँद को देखकर सारी रात श्वान जैसा भौंकता है। ईर्ष्या-द्वेष से प्रेरित निन्दा करने वाले को कोई दण्ड देने की जरूरत नहीं है। वह निन्दक बेचारा स्वयं दण्डित होता है। आप चैन से सोइए और वह जलन के कारण सो नहीं पाता। उसे और क्या दण्ड चाहिए? निरन्तर अच्छा काम करते जाने से उसका दण्ड भी सख्त होता जाता है। जैसे एक कवि ने अच्छी कविता लिखी, ईर्ष्याग्रस्त निन्दक को कष्ट होगा। अब अगर एक और अच्छी लिख दी। तो उसका कष्ट दुगुना हो जायेगा। **[2020 ZM]**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) निन्दा कितने प्रकार की होती है?
(iv) लेखक के अनुसार ईर्ष्या-द्वेष से प्रेरित होकर निन्दा करने वाले व्यक्ति किस प्रकार स्वयं को दण्डित करते हैं?
(v) ईर्ष्या-द्वेष से निन्दा करने वाले निन्दक की स्थिति कैसी होती है?
(vi) मिशनरी भाव से निन्दा करने में क्या मिलता है?
(vii) ईर्ष्या-द्वेष से प्रेरित निन्दक किस कारण सो नहीं पाता?

(च) कुछ 'मिशनरी' निन्दक मैंने देखे हैं। उनका किसी से बैर नहीं, द्वेष नहीं। वे किसी का बुरा नहीं सोचते, पर चौबीसों घण्टे वे निन्दा कर्म में बहुत पवित्र भाव से लगे रहते हैं। उनकी नितान्त निर्लिप्तता, निष्पक्षता इसी से मालूम होती है कि वे प्रसंग आने पर अपने बाप की पगड़ी भी उसी आनन्द से उछालते हैं, जिस आनन्द से अन्य लोग दुश्मन की। निन्दा इनके लिए 'टानिक' होती है। **[2020 ZC]**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) लेखक 'मिशनरी' निन्दक किसे कहता है?
अथवा मिशनरी निन्दक का अभिप्राय स्पष्ट कीजिए।
(iv) लेखक के अनुसार निन्दक लोगों की निष्पक्षता का प्रमाण क्या है?
(v) मिशनरी निन्दक किस भाव से निन्दा करने में लगे रहते हैं?
(vi) पाप की पगड़ी उछालना का भाव स्पष्ट कीजिए।
(vii) लेखक की दृष्टि में निन्दक का टानिक क्या है?

(छ) निन्दा कुछ लोगों की पूँजी होती है। बड़ा लंबा-चौड़ा व्यापार फैलाते हैं वे इस पूँजी से। कई लोगों की प्रतिष्ठा ही दूसरों की कलंक-कथाओं के पारायण पर आधारित होती है। बड़े रस-विभोर होकर वे जिस-तिस की सत्य कल्पित कलंक-कथा सुनाते हैं और स्वयं को पूर्ण संत समझने की तुष्टि का अनुभव करते हैं। **[2019 CV]**

प्रश्न– (i) निन्दा किसकी पूँजी होती है?
(ii) कुछ लोगों की प्रतिष्ठा का आधार क्या होता है?
(iii) 'सत्य कल्पित कलंक' कथा का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
(iv) रेखांकित अंश का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
(v) पाठ का शीर्षक और लेखक का नाम लिखिए।

(ज) 'क' कई महीने बाद आये। सुबह चाय पीकर अखबार देख रहा था कि वे तूफान की तरह कमरे में घुसे, 'साइक्लोन की तरह मुझे अपनी भुजाओं में जकड़ा तो मुझे धृतराष्ट्र की भुजाओं में जकड़े भीम के पुतले की याद आ गयी। यह धृतराष्ट्र की ही जकड़ थी। अंधे धृतराष्ट्र ने टटोलते हुए पूछा, "कहाँ है भीम? आ बेटा, तुझे कलेजे से लगा लूँ।" और जब भीम का पुतला उनकी पकड़ में आ गया तो उन्होंने प्राणघाती स्नेह से उसे जकड़ कर चूर कर डाला। **[सा० 2020 ZH]**

प्रश्न– (i) 'क' किस तरह कमरे में घुसे और उन्होंने किस तरह मुझे भुजाओं में जकड़ा?

(ii) मुझे किसके पुतले की याद आ गयी?

(iii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

(iv) धृतराष्ट्र ने भीम के पुतले के साथ क्या किया?

(v) दिये गये गद्यांश के पाठ का शीर्षक एवं लेखक का नाम लिखिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. हरिशंकर परसाई का जीवन-परिचय देते हुए उनकी कृतियों का उल्लेख कीजिए। **[2016 SA, SD, 17 MC, MF, 18 AA, 20 ZH, ZI, ZK, ZN]**
2. हरिशंकर परसाई की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए। **[2016 SG, 17 ME]**
3. हरिशंकर परसाई का साहित्यिक परिचय दीजिए। **[2017 MA]**
4. हरिशंकर परसाई का जीवन-परिचय देते हुए उनकी कृतियों तथा भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।
5. 'निन्दा रस' पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।
6. निम्नलिखित सूक्तिपरक वाक्यों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए—

   (क) निन्दा का उद्गम ही हीनता और कमजोरी से होता है।

   (ख) अद्भुत है मेरा यह मित्र! उसके पास दोषों का 'केटलाग' है।

   (ग) कुछ लोग बड़े निर्दोष मिथ्यावादी होते हैं।

   (घ) छल का धृतराष्ट्र जब आलिंगन करे तो पुतला ही आगे बढ़ाना चाहिए।

   (ङ) कठिन कर्म ही ईर्ष्या-द्वेष और इनसे उत्पन्न निन्दा को मारता है।

   (च) इसलिए सन्तों ने निन्दकों को 'आँगन कुटी छवाय' पास रखने की सलाह दी है।

   (छ) निन्दकों की सी एकाग्रता, परस्पर आत्मीयता, निमग्नता भक्तों में दुर्लभ है।

   (ज) निन्दा कुछ लोगों की पूँजी होती है।

   (झ) ज्यों-ज्यों कर्म क्षीण होता जाता है, त्यों-त्यों निन्दा की प्रवृत्ति बढ़ती जाती है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. धृतराष्ट्र का उल्लेख लेखक ने क्यों किया है?
2. निन्दा रस के लेखक ने अपने निन्दक मित्र की किन आदतों पर व्यंग्य किया है?
3. निन्दा का उद्गम किस प्रकार होता है?
4. निन्दा रस निबंध में निन्दकों के कितने प्रकार बताये गये हैं?
5. निन्दा की प्रवृत्ति से बचने के क्या उपाय हो सकते हैं?

6. "भावना के अगर काँटे होते तो उसे मालूम होता कि वह नागफनी को कलेजे से चिपकाये है। छल का धृतराष्ट्र जब आलिंगन करे, तो पुतला ही आगे बढ़ाना चाहिए।" भाव स्पष्ट कीजिए।
7. निन्दा करने वालों की प्रवृत्तियाँ कितने प्रकार की होती हैं? 'निन्दा रस' निबन्ध के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
8. अपने किसी साथी पर आप व्यंग्य-प्रधान शैली में दस वाक्य लिखिए।
9. प्रस्तुत निबंध का आशय अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।
10. 'निन्दा रस' से लेखक का क्या तात्पर्य है?
11. निन्दा करने वालों की मनोवृत्तियाँ कितने प्रकार की होती हैं?
12. मिशनरी निन्दक से लेखक का क्या तात्पर्य है?